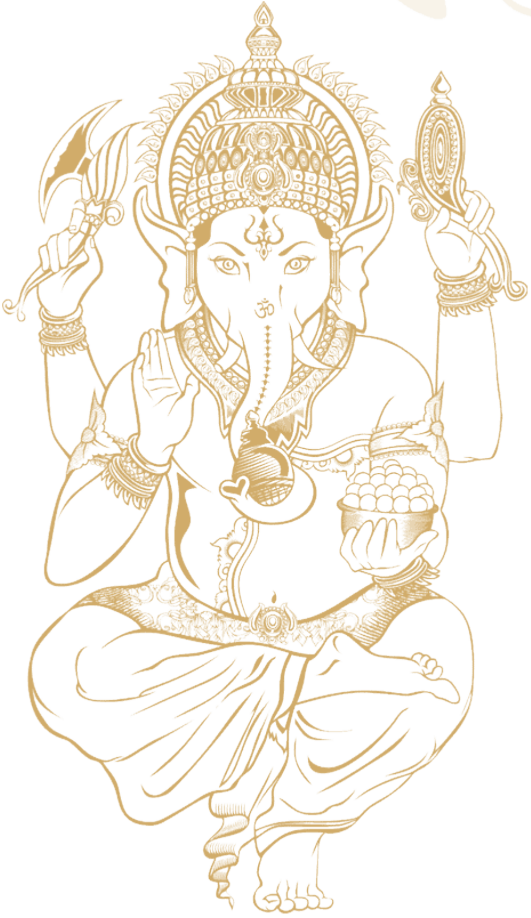

Bharat Kanda

22 Apr 1992

10:30 AM

Jabalpur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120513001

तिथि 22/04/1992 **समय** 10:30:00 **वार** बुधवार **स्थान** Jabalpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:45:15
अक्षांश 23:10:00 उत्तर **रेखांश** 79:57:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:10:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	00:21:49 घं
वेलान्तर	00:01:31 घं
सूर्योदय	05:43:58 घं
सूर्यास्त	18:33:49 घं
चैत्रादि संवत	2049
शक संवत	1914
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	6
नक्षत्र	मूल
योग	शिव
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भा-भारत
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

केतु 2वर्ष 3मा 16दि

चन्द्र

08/08/2020
09/08/2030

चन्द्र	09/06/2021
मंगल	08/01/2022
राहु	09/07/2023
गुरु	07/11/2024
शनि	09/06/2026
बुध	08/11/2027
केतु	08/06/2028
शुक्र	07/02/2030
सूर्य	09/08/2030

योगिनी

उल्का 1वर्ष 11मा 18दि

उल्का

10/04/2024
11/04/2030

उल्का	11/04/2025
सिद्धा	11/06/2026
संकटा	11/10/2027
मंगला	11/12/2027
पिंगला	10/04/2028
धान्या	10/10/2028
भ्रामरी	10/06/2029
भद्रिका	11/04/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			20:44:54	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	---	0:00			
सूर्य			08:33:53	मेष	अश्विनी	3	केतु	गुरु	उच्च राशि	1.97	कलत्र	पितृ	जन्म
चंद्र			08:57:34	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	सम राशि	1.14	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			25:42:02	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.39	आत्मा	भ्रातृ	वध
बुध			11:25:39	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	नीच राशि	1.07	मातृ	ज्ञाति	मित्र
गुरु	व		10:59:31	सिंह	मघा	4	केतु	शनि	मित्र राशि	1.26	पुत्र	धन	जन्म
शुक्र			24:36:58	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	उच्च राशि	1.46	अमात्य	कलत्र	अतिमित्र
शनि			23:40:24	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	मंगल	स्वराशि	1.22	भ्रातृ	आयु	प्रत्यारि
राहु			08:39:23	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	नीच राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु			08:39:23	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	नीच राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

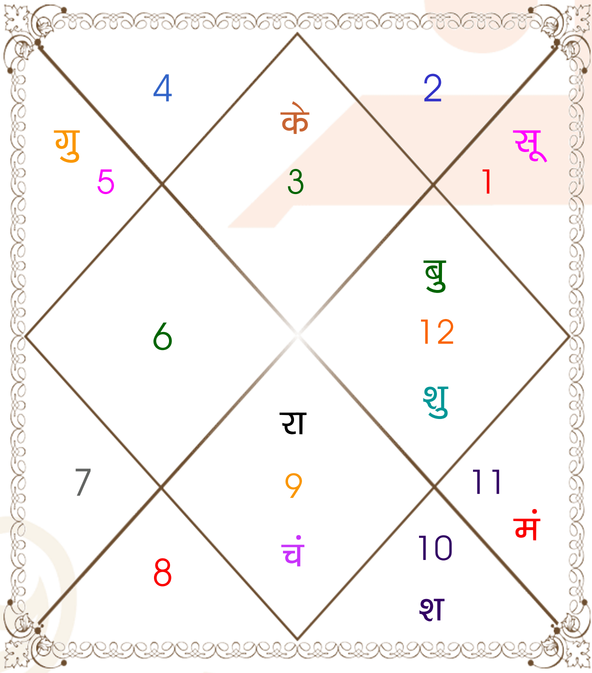
4
गु
5
के
3
2
सू
1
6
बु
12
शु
7
रा
9
चं
11
मं
8
10
श

चन्द्र कुंडली

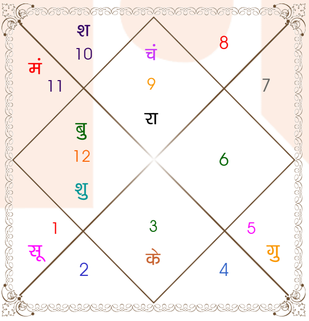
श
10
चं
9
8
मं
11
7
रा
बु
12
शु
6
1
सू
3
के
5
गु
2
4

नवमांश कुंडली

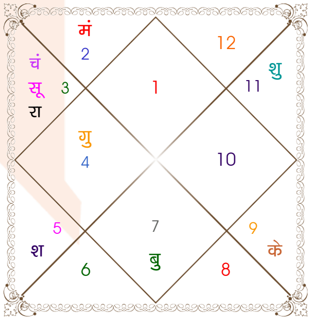
मं
2
12
चं
सू
3
रा
1
11
शु
गु
4
10
5
श
7
9
के
6
बु
8

सर्वाष्टकवर्ग

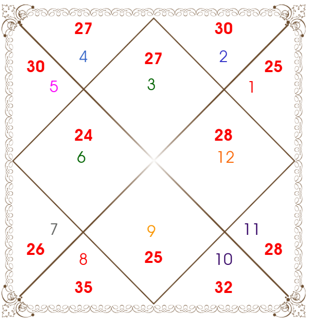
27
4
30
5
27
3
30
2
25
1
24
6
28
12
7
26
8
35
9
25
11
28
10
32

दशमांश कुंडली

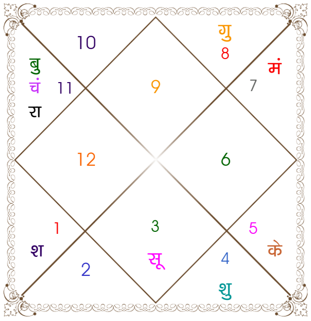
10
गु
8
मं
7
बु
चं
11
रा
9
12
6
1
श
3
सू
5
के
2
4
शु

नक्षत्रफल

आपका जन्म मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण राक्षस, नाड़ी आद्य, योनि श्वान तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का शुभारम्भ "भ" या "भा" अक्षर से होगा- यथा भगत सिंह

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। इस चरण में जन्म लेने से जातक के लिए स्वयं अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में इसकी शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे उस दिन जपे हुए नक्षत्र के दंशाश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार पूर्ण विधि विधान से इसकी शान्ति करने के उपरान्त सम्बन्धित जातक को कोई भी कष्ट नही होता हैं तथा वह सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करता हैं।

मंत्र - ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुश्‍ मानसागरी

आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार के सुखों का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे। आपको वाहन सुख की प्राप्ति भी होगी तथा आनन्दपूर्वक आप इसका उपभोग कर सकेंगे। शारीरिक बल से भी आप पूर्ण रूपेण युक्त रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि से किसी भी कार्य को सम्पन्न करेंगे शीघ्रता या चंचलता पूर्वक कार्य करना आपको पसन्द नहीं होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में आप पूर्ण रूपेण सक्षम रहेंगे तथा वे भी आपसे अत्यन्त भय ग्रस्त रहेंगे। विभिन्न शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा तथा समाज में विद्धान के रूप में यश प्राप्त करेंगे।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

अर्थात् मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक सुख से युक्त, धनाढ्य, वाहन से सुसम्पन्न, हिंसक, बलवान, स्थिरकार्य करने वाला, शत्रु हन्ता और विद्वान होता है।

आप एक वाक्पटु पुरुष होंगे तथा अपनी इस विशेषता से अधिकांश कार्यों को सिद्ध करने में सफल हो जाएंगे। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा तथा यदा कदा समाज में अन्य जनों के समक्ष इसका आप प्रदर्शन करते रहेंगे। आपकी अधिकाँश बातों को प्रमाण के अभाव में अन्य लोग शीघ्रता से स्वीकार नही करेंगे।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुरवाणी से युक्त, अप्रामाणिक, धूर्त, कृतघ्न तथा धनी होता है।

आप आजीवन धन ऐश्वर्य तथा वैभव से सर्वदा समृद्ध रहेंगे तथा इनका आपके जीवन में अभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप दृढतापूर्वक कार्य करना पसन्द करेंगे अस्थिर होकर कार्य करने में आपको कोई आनन्द नहीं आएगा। आपके पास स्थिर वैभव भी रहेगा।

मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक साहसी, धन और मान से सम्पन्न, स्थिर विचारों तथा ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके कंठ एवं मुख की आकृति दीर्घ होगी तथा दान्त, कान एवं ओठ भी देखने में स्थूल रहेंगे। साथ ही दोनों भुजाएं कोमल तथा मांसल होगी। आप को पिता द्वारा प्रचुर मात्रा में धनादि की प्राप्ति होगी जिसका आप प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी लेखन कार्य में भी रूचि रहेगी तथा इसी सन्दर्भ में काव्य आदि सृजन में सफलता प्राप्त करेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा बल का आप में अभाव नहीं रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी वक्तृत्व शक्ति अत्यन्त ही तीक्ष्ण होगी जिससे लोग आपकी बातों को ध्यान पूर्वक सुनेंगे। नाना प्रकार के कार्यो को सम्पन्न करने में भी आप दक्षता का परिचय देंगे। चित्रकारी या शिल्प कला में आप विशिष्ट योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। आप प्रकृति से गम्भीर रहेंगे तथा धर्म के विषय में काफी ज्ञान स्वपरिश्रम से अर्जित करेंगे। अपने भाई बन्धुओं से आपके संबंध औपचारिक ही अधिक रहेंगे। उत्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त आप प्रेम तथा सम्मान सहित ही वश में किये जा सकेंगे। बल पूर्वक या आपकी इच्छा के विरूद्ध कुछ नही किया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।

वक्ता स्थूलदरश्रवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योऌश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें गोलाकृति की तथा हाथ एवं कन्धे सामान्य से अधिक लम्बाई से युक्त रहेंगे। उम्र के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। आप को पानी के किनारे निवास करना या भ्रमण करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। अतः इसके लिए आप सदैव तत्पर रहेंगे। साथ ही हृदय से आप हमेशा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आपकी हड्डियां भी पुष्ट एवं मजबूत रहेंगी अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार मानेंगे तथा ह्दय से उनका धन्यवाद भी करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घांसो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोऌस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप किसी न किसी प्रकार के कार्य में अपने को हमेशा व्यस्त रखेंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे एवं इसके द्वारा आपके काफी कार्य स्वयं ही सिद्ध हो जाएंगे। आपका अर्न्तमन त्याग की भावना से परिपूर्ण रहेगा। आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा एवं साहसी प्रवृति से युक्त रहेंगे। आपके शत्रु प्रायः आपसे हारे हुए रहेंगे एवं आपसे भय की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग एवं धनाढ्य लोगों के प्रिय रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण मान सम्मान प्राप्त होगा।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऌरिहन्ता साम्नैकसाध्योऌशिवभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में निपुण रहेंगे। आपका चरित्र भी निर्मल रहेगा। आप हमेशा सत्य बोलने में विश्वास करेंगे तथा इसी प्रवृति का आप पालन करते रहेंगे। इसके साथ ही आप व्यय करने में अत्यन्त सावधानी का परिचय देंगे एवं आय के अनुसार ही व्यय करके अनावश्यक आर्थिक संकट से सुरक्षित रहेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर एवं सुडौल रहेंगे। आप अपने परिवार में प्रधान एवं श्रेष्ठ रहेंगे। सभी परिवार जन आपको यथा योग्य सम्मान तथा स्नेह प्रदान

करेंगे। आप विशेष रूप से इंजीनियरिंग या चित्रकला से क्षेत्र में विशिष्ट सफलता भी अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर पुरूष होंगे तथा सत्य का अनुपालन करने के लिए आजीवन तत्पर रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि के होंगे अतः स्थिर कार्य करना ही पसन्द करेंगे। आप में सत्व गुण की भी प्रधानता विद्यमान रहेगी एवं मन में अन्य जनों के प्रति स्नेह तथा प्रेम का भाव रहेगा। किसी प्रकार से द्वेष या वैमनस्य का भाव रखना आपको रूचिकर नहीं लगेगा। आप एक सुन्दर पुरुष होंगे तथा गुणवती एवं बुद्धिमती पत्नी के पति होंगे। नाना प्रकार के खेलों तथा नाटकों के प्रति आपके मन में रूचि रहेगी। आपका शरीर भी स्थूलता को प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप ऐसा कार्य सम्पन्न करेंगे जिससे आपके परिवार या कुल को परेशानी हो सकती है। लेकिन समाज में आप पूर्ण रूपेण लोकप्रिय रहेंगे।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप सर्वगुणों से सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा समाज से पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति करेंगे। अपने अन्य भाई बहनों में आप श्रेष्ठ एवं मुख्य रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक भी होगी तथा देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में विशिष्ट श्रद्धा का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा। आपकी गमनगति अत्यन्त ही आकर्षक रहेगी तथा सहनशीलता के भाव का सर्वथा अभाव रहेगा फलतः कई बार आपको हतोत्साहित भी होना पड़ सकता हैं।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुर्वर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आप को अधिक बोलने वाले होंगे तथा मन से दया एवं कोमल भावों का प्रदर्शन अल्प मात्रा में ही करेंगे। आपकी प्रवृति साहसी होगी तथा साहसपूर्वक आपके अधिकाँश कार्य सुसम्पन्न होंगे। आप शीघ्र अकारण ही अपने क्रोध का भी प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति होंगे। साथ ही आपकी प्रवृति अन्य लोगों से विवाद करने की भी रहेगी। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा फलतः शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से व्याकुलता का अनुभव कर सकते हैं। साथ ही आप का शारीरिक स्वरूप भी आकर्षक होगा। इसके अतिरिक्त आप यदा

कदा अपने सम्भाषण में कठोर शब्दों का भी प्रयोग करेंगे जिससे श्रोता आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

श्वान योनि में पैदा होने के कारण आप हमेशा अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप में हमेशा उत्साह की भावना रहेगी। अतः अधिकाँश कार्य आप इसी प्रवृति से करने में सफल हो जाएंगे। आपकी प्रवृति साहस से भी युक्त रहेगी अतः आपकी समस्त समस्याओं का साहस पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे। आपकी बन्धुवर्ग से विशेष घनिष्ठता कम ही रहेगी। तथा माता पिता के प्रति आप अत्यन्त ही श्रद्धालु रहेंगे एवं निःस्वार्थ भाव से आजीवन उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको

प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा सर्वथा कष्ट तथा अशुभ फल देने वाला होगा। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभकार्य को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूपेण सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी।

यदि समय आपके लिए अशुभ चल रहा हो मन में परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं गुरूवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही पीत वस्त्र, पीत पुष्प, पीत चन्दन, सोना, पुखराज , चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलो में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम किसी योग्य विद्वान से 16000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको शुभ फल प्राप्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।